Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 18th Aug. 2018, Revised on 20th Aug. 2018; Accepted 26th Aug. 2018

शोध आलेख

कम्प्यूटर आधारित उत्कर्ष योजना की स्थिति एवं चुनौतियाँ

* **डॉ. सुषमा तलेसरा,** प्रोफेसर एवं **भावना गहलोत,** शोधार्थी
शिक्षा विभाग, शिक्षा विभाग विद्याभवन, जी.एस.शिक्षक महाविद्यालय (सीटीई)
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Key words: *स्थिति चुनौतियाँ, माध्यमिक स्तर, कम्प्यूटर आधारित उत्कर्ष योजना आदि।*

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र कम्प्यूटर आधारित उत्कर्ष योजना स्थिति एवं चुनौतियाँ से सम्बन्धित है। सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर 9 व 10 में क्विज बेस्ट ई–लर्निंग उत्कर्ष योजना विद्यालयों में कितनी सफल हुई है इसकी विद्यालयों में क्या स्थिति है व इसके क्रियान्वयन में क्या–क्या समस्याएँ एवं चुनौतियाँ है, का अध्ययन करना इसका उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इसके 600 विद्यार्थियों 300 ग्रामीण 300 शहरी 180 अध्यापकों एवं 30 के 30 प्रधानाध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। उपकरणों के रूप में प्रश्नावली छात्र एवं अध्यापकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची प्रधानाध्यापक जिला शिक्षा अधिकारी एवं प्रोजेक्ट के निदेश के लिए एवं अवलोकन प्रपत्र व जाँच सूचि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत का प्रयोग किया गया शोध के निष्कर्ष से पता चलता है कि प्रोजेक्ट उत्कर्ष में विद्यार्थी एवं अध्यापक रूचि ले रहे लेकिन संसाधन के अभाव के कारण इसके विद्यालयों सुचारू रूप से क्रियान्वयन में समस्या आ रही है। साथ ही इसमें जो ई–लर्निंग सामग्री है वह बोर्ड परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है यह केवल क्विज तक ही सीमित है इसलिए इससे विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में तो कोई विशेष फर्क नहींपड़ा है लेकिन विद्यार्थियों की आईक्यू. जरूर बड़ा है।

प्रस्तावना

पिछले कुछ समय में यह आवश्यकता महसूस की जा रही थी आज के सूचना तकनीकि के युग में विद्यार्थियों को किस प्रकार परम्परागत पुस्तकों के अतिरिक्त प्रभावी और रोचक तरीके से अध्यापन कराया जाए। उक्त संदर्भ में प्रोजेक्ट उत्कर्ष इस कमी को दूर करता है। इसके माध्यम से कम्प्यूटर आधारित शिक्षण (ई–लर्निंग) उपयोगी सिद्ध हुआ है।

उत्कर्ष योजना मोईनी फाउण्डेशन द्वारा चलाई गई है मोईनी फाउण्डेशन शिक्षा में गुणवत्ता के अधिकार के लिए कार्य करती है। मोइनी फाउण्डेशन का उद्देश्य है (राईट टू क्वालिटी एज्युकेशन) है मोइनी फाउण्डेशन के अनुसार शिक्षा का अधिकार तो सबको दिया गया लेकिन शिक्षा में गुणवत्ता की बात नहीं कही है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए मोइनी फाउण्डेशन ने उत्कर्ष योजना पूरे राजस्थान में प्रारम्भ की है। आज के जो विद्यार्थी है उनकी रूचि को ध्यान में रखते हुए मोइनी फाउण्डेशन ने उत्कर्ष योजना का संचालन किया। उत्कर्ष योजना क्विज बेस्ट लर्निंग सिस्टम है जो के.बी.सी. की तर्ज पर कार्य करता है इसमें लॉग इन करते ही विषयवार प्रश्न खुल जाते हैं। ये प्रश्न वस्तुनिष्ठ होते हैं जिनके चार विकल्प होते हैं। हर प्रश्न को हल करने के लिए दो अवसर दिये जाते हैं इसके बाद

ही मार्किंग होती है। परीक्षा पूरी होने के बाद अंक जुड़ जाते हैं और इसी से बच्चे की शैक्षिक स्थिति का मूल्यांकन किया जाता है।

सरकारी विद्यालयों में सूचना प्रौद्योगिकी एवं क्विज आधारित अधिगमन प्रणाली (Quiz Based Learning System) द्वारा शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक मिशन है। इसके तहत छात्र विक्ज व केबीसी (कौन–बनेगा करोड़पति) के तर्ज पर खेल–खेल में सरल व रूचिपूर्ण तरीके से पढ़ते हैं तथा साथ ही स्कूली शिक्षा से संबंधित एनसीईआरटी (हिन्दी माध्यम) की टेक्स्टबुक्स, गणित, विडियो, साइन्स विडियो विज्ञान के प्रयोग, एनीमेशन विडियो–ऑडियो आदि का समावेश किया गया है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदया, राजस्थान के निर्देशानुसार प्रोजेक्ट उत्कर्ष का क्रियान्वयन प्रत्येक जिले के समस्त आईसीटी सुविधा युक्त विद्यालयों में जिला कलक्टर के मार्गदर्शन में, माध्यमिक शिक्षा विभाग एवं मोइनी फाउण्डेशन, जयपुर द्वारा स्थानीय सीएसआर के सहयोग से किया जाता है। इसी क्रम में राजस्थान राज्य के 7 जिलों (झालावाड़, जोधपुर, उदयपुर, सवाईमाधोपुर, बारां, अजमेर, पाली) 1100 से ज्यादा विद्यालयों में प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन किया जा चुका है।

प्रोजेक्ट के उद्देश्य

राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर द्वारा क्विज आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण करवाना इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य है।

1. प्रोजेक्ट के माध्यम से ऐसी अधिगम सामग्री को सृजित करना जिससे शिक्षण, अधिगम एवं स्वाध्याय सुगम हो सके।
2. अध्यापक नई तकनीक से जुड़ सके व प्रभावी शिक्षण करवा सके।
3. विद्यार्थियों को एक बड़े समूह में आपसी समझ से अधिगम हेतु प्रेरित करना।
4. शिक्षक की उपस्थिति नहीं होने पर भी विद्यार्थी का अधिगम न हो इसकी व्यवस्था करना।
5. इन्टरनेट के माध्यम से प्रत्येक शिक्षक व विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों का मूल्यांकन करना एवं कमियों को चिन्हित करना एवं सुधार हेतु प्रयास करना।
6. विद्यालयों में कम्प्यूटर लेब की व्यवस्था एवं संचालन को सुनिश्चित करना एवं नवाचारों से अवगत करवाना।
7. शिक्षक विद्यार्थी व प्रशासन को सुनियोजित तरीके से एक सिस्टम का हिस्सा बनाना।
8. खेल–खेल में अध्ययन के प्रति रूचि जाग्रत करने हेतु इस प्रोजेक्ट के माध्यम से अध्ययन सामग्री को सभी विद्यार्थियों को सुगमता से उपलब्ध करवाना।

योजना के चरण

जिला प्रशासन के निर्देशन में मोइनी फाउण्डेशन के तकनीकि सहयोग से उदयपुर के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा जिले में 12 विद्यालय (1 विद्यालय प्रति ब्लॉक एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय) का चयन किया। जिसमें प्रोजेक्ट को लागू करने का निर्णय लिया। साथ ही उक्त चयनित 12 विद्यालय में कक्षा 9 को प्रारम्भिक चरण में लिया गया। कक्षा 9 के 6 विषयों (हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक, विज्ञान एवं संस्कृत) के निष्णात अध्यापकों के साथ विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई।

विद्यालय में प्रोजेक्ट उत्कर्ष के क्रियान्वयन के चरण

1. ई–लर्निंग हेतु वातावरण तैयार करना।
2. क्विज अकेडमी को ऑफलाइन प्रयोग हेतु इन्स्टॉल करवाना।

3. प्री–टेस्ट (ऑनलाइन) का आयोजन करवाना।
4. दो सप्ताह तक नियमित अभ्यास (ऑफलाइन) करना।
5. पोस्ट टेस्ट (ऑनलाइन) का आयोजन करना।

प्रोजेक्ट उत्कर्ष ऑफलइन के चरण

1. अभ्यास के लिए प्रश्नों की संख्या का चयन।
2. विषय का चयन।
3. अध्याय का चयन।
4. अभ्यास के लिए माध्यम का चयन (क्विज, केबीसी, फ्लिप कार्ड) ।
5. अभ्यास कार्ड।

प्रोजेक्ट उत्कर्ष – ऑनलाइन के चरण

1. इंटरनेट से ूनप्रंबंजमउलण्वतहण् पर जाना।
2. रजिस्टर्ड ई–मेल आईडी से क्विज अकाउंट खोलना।
3. ऑफलाइन की तरह अभ्यास करना।
4. क्विज रिपोर्ट एवं प्रगति की जानकारी प्राप्त करना।

समस्या कथन

शोधार्थी का प्रयोजन उदयपुर जिले (ग्रामीण/शहर) में माध्यमिक स्तर प्रोजेक्ट उत्कर्ष की स्थिति एवं चुनौतियों का अध्ययन करना। अतः समस्या कथन निम्नानुसार है–

''कम्प्यूटर आधारित उत्कर्ष योजना की स्थिति एवं चुनौतिया''

- **अध्ययन का औचित्य तथा उपादेयता–** आज का छात्र कल का भविष्य है इसी बात को ध्यान में रखकर शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए शिक्षा में परिवर्तन एवं परिमार्जन करना वर्तमान समय की मांग है। शिक्षा, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों शिक्षा में नवीन प्रयोग, नवीन शिक्षण पद्धतियों को अपनाकर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर व्यक्ति को भविष्य की चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

वर्तमान युग तकनीकि का युग है अतः शिक्षा जगत में कम्प्यूटर (तकनीक) की उपयोगिता स्वीकार की गई है विद्यार्थियों को शिक्षित करने हेतु कम्प्यूटर एक उपयोग साधन सिद्ध हो चुका है। कम्प्यूटर की शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता को देखते हुए पिछले कुछ समय से यह आवश्यकता, महसूस की जा रही है थी आज वे सूचना तकनीकि के युग में विद्यार्थियों को किस प्रकार परम्परागत पुस्तकों के अतिरिक्त प्रभावी और रोचक तरीके से अध्यापन कराया जाए उक्त संदर्भ में प्रोजेक्ट उत्कर्ष कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण इस कमी को दूर कर सकता है।

अतः प्रस्तुत विषय के महत्व को देखते हुए यह जानना जरूरी है कि यह सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर कक्षा 9वीं व 10वीं में यह प्रोजेक्ट किस सीमा तक सफल हुआ है। तथा इसके इसके सुचारू रूप से क्रियान्वयन में क्या बाधाएँ आ रही है। क्या वास्तव में यह प्रोजेक्ट शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में सहायक है क्या प्रोजेक्ट उत्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में उपयोगी है। यह जानने के लिए शोधकर्त्री द्वारा अपना शोध अध्ययन प्रस्तुत समस्या पर किया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. सरकारी विद्यालयों में प्रोजेक्ट ''उत्कर्ष'' की स्थिति का पता लगाना।

2. उदयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में प्रोजेक्ट उत्कर्ष के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ का अध्ययन करना।
3. उदयपुर जिले के शहरी क्षेत्र के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में प्रोजेक्ट उत्कर्ष के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
4. उदयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में प्रोजेक्ट उत्कर्ष के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान के उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में उदयपुर जिले के उन्हीं राजकीय विद्यालयों का चयन किया जायेगा जिसमें प्रोजेक्ट उत्कर्ष के द्वारा अध्ययन कराया जाता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया जाएगा।

अध्ययन में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

- **स्थिति–** स्थिति से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति समुदाय अथवा क्षेत्र की वह वैधानिक वस्तुस्थिति से है जो अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है तथा जो उसकी मर्यादा, पद, सम्मान आदि का सूचक है। जो जैसा है उसे उसी रूप में देखना। प्रस्तुत शोध में स्थिति से तात्पर्य कम्प्यूटर आधारित उत्कर्ष योजना की वर्तमान वस्तुस्थिति से है।
- **चुनौतियाँ–** प्रोजेक्ट उत्कर्ष द्वारा शिक्षण एवं अधिगम में आने वाली बाधाओं को चुनौती माना गया है।
- **माध्यमिक स्तर–** माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 9 एवं 10वीं के छात्र।
- **प्रोजेक्ट उत्कर्ष–** क्विज बेस्ड लर्निंग सिस्टम (कम्प्यूटर आधारित)।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी द्वारा उदयपुर जिले के 30 सरकारी विद्यालय जिसमें 15 ग्रामीण एवं 15 शहरी विद्यालयों से लगभग 600 विद्यार्थी, 180 शिक्षक एवं 30 प्रधानाध्यापक का चयन किया गया।

	विद्यालय (30)	**विद्यार्थी (600)**	**अध्यापक (180)**	**प्रधानाध्यापक (30)**
ग्रामीण	15	300	90	15
शहरी	15	300	90	15

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध की प्रवृत्ति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि सर्वोत्तम है।

शोध उपकरण

अतः प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन में आँकड़ों के संग्रहण हेतु एक से अधिक प्रकार के स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया है जो निम्न है–

1. **साक्षात्कार अनुसूची–** प्रधानाध्यापक, जिला शिक्षा अधिकारी, एवं प्रोजेक्ट उत्कर्ष के निदेशक के लिए।
2. स्वनिर्मित प्रश्नावली– अध्यापक एवं विद्यार्थियों के लिए।
3. अवलोकन एवं जाँच सूची।
4. सांख्यिकीय तकनीकी।

निष्कर्ष

प्रोजेक्ट उत्कर्ष की स्थिति एवं चुनौतियों से सम्बन्धित निष्कर्ष

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अधिकतर विद्यार्थियों की उत्कर्ष योजना आनन्ददायी लगती है व इस योजना से पढ़ाई करना उन्हें सामान्य कक्षागत शिक्षण से अच्छा लगता है। शहरी विद्यार्थियों को उत्कर्ष योजना से सबसे प्रभावी विषय विज्ञान समझ में आया व ग्रामीण विद्यार्थियों हिन्दी व अंग्रेजी समझ में आया।

शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही विद्यार्थियों का कहना है ई–लर्निंग से कम्प्यूटर द्वारा सीखने के प्रति रूचि बढ़ी है एवं इस योजना से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है एवं विद्यार्थी गणित, विज्ञान जैसे कठिन विषयों के प्रति रूचि बढ़ी है एवं उत्कर्ष योजना से विद्यार्थियों को विषयवस्तु अधिक समय तक याद रहती है।

शहरी ग्रामीण विद्यार्थी मानते हें उत्कर्ष योजना से पढ़ने के बाद भी अच्छे विद्यालय में वेग तो लेकर जाता ही पढ़ता है व घर पर तो पढ़ाई करनी ही पड़ती है। शहरी ग्रामीण दोनों ही विद्यार्थियों का कहना है उत्कर्ष योजना सभी कक्षाओं के लिए होनी चाहिए।

शहरी ग्रामीण विद्यार्थियों का मानना है सामग्री पुस्तक में दी गई विषयवस्तु से सामान्य है। ई–लर्निंग में अध्यापक उनका सहयोग करते है प्रश्न प्रोजेक्ट के इन्चार्ज ही सहयोग करते है। अन्य विषयाध्यापकों का सहयोग कम रहता है। शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थी अगली कक्षा में इससे पढ़ने के लिए पूर्ण सहमत है।

अध्यापकों के लिए प्रश्नावली से प्राप्त निष्कर्ष

- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों का कहना है कि ई–लर्निंग सामग्री उनके विषय को समझने के लिए 50 से 75 प्रतिशत तक पर्याप्त है।
- अध्यापकों के अनुसार ई–लर्निंग सामग्री उनके विषय के लिए जानकारी के साथ समझ पैदा करने तक सीमित है।
- अध्यापकों के अनुसार उत्कर्ष योजना द्वारा अधिगम का मूल्यांकन दी गई योजनानुसार करवाया जाता है।
- शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के अनुसार इस प्रोजेक्ट द्वारा पढ़ने से कक्षा में अनुशासन की स्थिति अच्छी रहती है।
- शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के अनुसार उत्कर्ष कार्यक्रम टाइम टेबल के अनुरूप संचालित है।
- ग्रामीण अध्यापकों के अनुसार समयानुसार कक्षाएँ ली जाती है।
- शहरी अध्यापकों के अनुसार ई–लर्निंग सामग्री के उपयोग से छात्रों के परीक्षा परिणाम में 10 से 20 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है व ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों के अनुसार 20 से 30 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है।
- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र अध्यापकों के अनुसार धीमी गति से सीखने वाले छात्रों को ई–लर्निंग में परेशानी होती है।

- शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के अनुसार इसमें जो प्रश्न है वह वस्तुनिष्ठ है व बोर्ड परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न आते हैं इसलिए यह योजना परीक्षा की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन इससे विद्यार्थियों का आईक्यू जरूर बढ़ा है।

अवलोकन से प्राप्त निष्कर्ष

1. शहरी क्षेत्र में कम्प्यूटर कक्ष के आकार की स्थिति संतोषप्रद है एवं ग्रामीण क्षेत्र में औसत है।
2. कम्प्यूटर के रखरखाव की व्यवस्था शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में औसत है।
3. बिजली की व्यवस्था शहरी क्षेत्र में औसत व ग्रामीण क्षेत्र में असंतोषप्रद है।
4. ई–लर्निंग के समय विद्यार्थियों की उपस्थिति शहरी क्षेत्र में औसत व ग्रामीण क्षेत्र में असंतोषप्रद है।
5. ई–लर्निंग सामग्री की उपलब्धता शहरी क्षेत्र में औसत व ग्रामीण क्षेत्र में असंतोषप्रद है।
6. बच्चों में अंतःक्रिया की स्थिति शहरी ग्रामीण में औसत है।

जाँच सूची से प्राप्त निष्कर्ष

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में कम्प्यूटर की संख्या उत्कर्ष योजना के अनुसार पर्याप्त नहीं है।
2. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश विद्यालयों में कम्प्यूटर के लिए अलग कक्ष है।
3. शहरी क्षेत्र में बिजली के विकल्प के लिए जेनरेटर उपलब्ध है व ग्रामीण क्षेत्र में अधिकांश विद्यालयों में जनरेटर उपलब्ध नहीं है।
4. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र में कम्प्यूटर कक्ष में पर्याप्त पंखे लनगे है।
5. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र में इन्टरनेट की स्पीड़ कम है।
6. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों के विद्यालयों में प्रोजेक्ट उत्कर्ष की कक्षाओं का अलग से टाईम टेबल लगा हुआ है।
7. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्र में सभी कम्प्यूटर चालु अवस्था में नहीं है।
8. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में विद्यार्थियों को सभी कम्प्यूटर चालु अवस्था में नहीं है कुछ कम्प्यूटर खराब पढ़े हैं।
9. शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अलग कम्प्यूटर उपलब्ध नहीं है।

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश विद्यालयों में ई–सामग्री की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है। शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में विद्यार्थी को कम्प्यूटर पर पर्याप्त समय नहीं दिया जाता है।

प्रधानाध्यापक से साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष

शहरी तथा ग्रामीण प्रधानाध्यापकों के अनुसार प्रोजेक्ट उत्कर्ष से विद्यार्थी पढ़ने में रूचि लेने लगे है। इससे विद्यार्थियों का अधिगम आसान हुआ है एवं विद्यार्थी कठिन विषयों गणित विज्ञान अंग्रेजी जैसे विषयों में रूचि लेने लगे है। विद्यार्थी प्रोजेक्ट उत्कर्ष से एवं अध्ययन को प्रोत्साहित हुए है।

शहरी प्रधानाध्यापक मानते है प्रोजेक्ट उत्कर्ष से विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में तो कुछ विशेष फर्क नहीं पड़ा क्योंकि इसमें प्रश्न बोर्ड परीक्षा के अनुरूप नहीं है लेकिन ग्रामीण प्रधानाध्यापक के अनुसार इससे विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में कुछ तो फर्क पड़ा परिणाम पहले से बेहतर है।

शहरी तथा ग्रामीण प्रधानाध्यापकों के अनुसार इससे विद्यार्थियों का आईक्यू बड़ा है।

प्रधानाध्यापक द्वारा प्रोजेक्ट उत्कर्ष की कक्षाओं एवं परीक्षाओं का विधिवत आयोजन करवाया जाता है एवं वे प्रोजेक्ट उत्कर्ष के लिए कम्प्यूटर जनरेटर, ई–लर्निंग संसाधनों की सुविधा को बेहतर बनाने में स्वयं रूचि लेते हैं।

- शहरी तथा ग्रामीण प्रधानाध्यापकों के अनुसार प्रोजेक्ट उत्कर्ष से जो विद्यार्थी कमजोर है वे भी पढ़ने में रूचि लेने लगे हैं।
- शहरी क्षेत्र के प्रधानाध्यापकों के अनुसार उत्कर्ष योजना विद्यार्थी के स्तर के अनुरूप है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र के प्रधानाध्यापक मानते है कि ग्रामीण बच्चे इस योजना से अध्ययन को आसानी से नहीं समझ पतो हैं।
- शहरी तथा ग्रामीण प्रधानाध्यपक मानते है कि प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी से इस योजना का संचालन सुचारूप रूप से नहीं हो पा रहा है।
- ग्रामीण प्रधानाध्यापक के अनुसार विभागीय कार्यों की अधिकता से अध्यापक इसमें रूचि नहीं लेते है। एवं इस योजना में सिर्फ प्रोजेक्ट उत्कर्ष के जो इंचार्ज ही रूचि लेते हैं। अन्य विषयाध्यापक इसमें रूचि लेते हैं।
- शहरी तथा ग्रामीण प्रधानाध्यापकों के अनुसार संसाधनों के अभाव से एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी एवं अध्यापकों द्वारा इसमें कम रूचि लेने से इस योजना का क्रियान्वयन सुचारू से नहीं हो रहा है।

जिला शिक्षा अधिकारी से साक्षात्कार से प्राप्त निष्कर्ष

उत्कर्ष योजना को सफल बनाने के लिए जिलाधीश महोदय द्वारा सभी ब्लॉक नोडल प्राचार्यों एवं सब नॉडल प्राचार्यों की मीटिंग का प्रबंधन किया जाता है एवं जिला स्तर पर प्रभारी अधिकारी एवं सह प्रभारी अधिकारी को 'दायित्व सौंपे गये है एवं प्रोजेक्ट उत्कर्ष के अन्तर्गत चयनित विद्यालयों में प्रशिक्षण एवं आमुखीकरण की योजना को समायानुसार क्रियान्वित किया जाता है एवं चयनित विद्यालय में समय विभाग चक्र के अनुसार प्रशिक्षण की योजना का क्रियान्वयन कराया जाता है।

उत्कर्ष योजना को सफल बनाने के लिए जिलाधीश महोदय द्वारा कार्यालय में मोईनी फाउण्डेशन के साथियों को आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करते है एवं प्रभारी एवं सह प्रभारी द्वारा मॉनीटरिंग की जाती है। ब्लॉक नॉडल प्रभारी द्वारा समय–समय पर विद्यालयों का निरीक्षण कर प्रोजेक्ट उत्कर्ष का फिडबेक लेना एवं माह के अंतिम कार्यदिवस पर मीटिंग लेकर समीक्षा करना। जिलाधीश महोदय के अनुसार सामान्य विद्यालयों की अपेक्षा जिन विद्यालयों में प्रोजेक्ट उत्कर्ष चल रहा है उन विद्यालयों के प्राचार्यों को सरकार द्वारा आवश्यक संसाधन जुटाने हेतु निर्देश दिए गए है तथा प्राचार्यों को भामाशाहों के सहयोग हेतु निर्देश दे रखे हैं।

प्रोजेक्ट उत्कर्ष के निदेशक से साक्षात्कार से प्रापत निष्कर्ष

प्रोजेक्ट उत्कर्ष के निदेशक के अनुसार प्रोजेक्ट उत्कर्ष को प्रारम्भ करने का उद्देश्य विद्यालयों में उपलब्धता आईसीटी संस्थानों के नियमित उपयोग द्वारा गुणात्मक शिक्षा व ई–लर्निंग को बढ़ावा देना।

- प्रोजेक्ट उत्कर्ष की सफलता के निदेशक द्वारा शिक्षकों व प्रधानाचार्यों के नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।
- जिला कलेक्टर महोदय व जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रोजेक्ट की नियमित प्रगति व समीक्षा व प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उचित दिशा निर्देश दिये जाते हैं।
- मोइनी फाउण्डेशन द्वारा प्रोजेक्ट की सफलता के लिए नियमित गतिविधियों जैसे छात्र आमुखीकरण, क्विज एकेडमी सॉफ्टवेयर सेटअप, टेस्ट, असाईनमेंट शिक्षक प्रशिक्षण, परिणाम विश्लेषण विद्यालय निरीक्षण रिमोट मॉनिटरिंग आदि का आयोजन किया जाता है।

- जिन विद्यालयों में प्रोजेक्ट का संचालन किया जा रहा है उनकी रिमोट मॉनिटरिंग डेसबोर्ड पर पंजीकरण किया जाता है। संबंधित विद्यालयों की गतिविधियों की जिला प्रशासन शिक्षा विभाग व मोइनी फाउण्डेशन द्वारा नियमित मॉनिटरिंग की जाती है।
- उत्कर्ष के निदेशक को इसकी क्रियान्विति सुव्यवस्थित आईसीटी लेब का अभाव पर्याप्त वित्त का अभाव आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- प्रोजेक्ट उत्कर्ष के सुचारू क्रियान्वयन के लिए नियमित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। मोइनी फाउण्डेशन द्वारा इस योजना का नियमित आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है व जिला प्रशासन व शिक्षा विभाग द्वारा भी नियमित मूल्यांकन किया जाता है।
- निदेशक के अनुसार योजना के मूल्यांकन के पश्चात् प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन से आईसीटी संसाधनों के उपयोग से शिक्षक छात्रों के सूचना प्रौद्योगिकी कौशल विकास छात्र नामांकन आदि में सकारात्मक परिवर्तन महसूस किए गए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, एण्ड कृष्णमूर्ति (1990) कम्प्यूटर प्रवेशिक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. भटनागर आभा (1989) ''कम्प्यूटर एक परिचय'', कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर।
3. रामजादा बी. एस (1997) शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. शर्मा, आर.ए. (2011) शिक्षा में अनुसंधान मेरठ विश्वविद्यालय, उत्तरप्रदेश
5. डॉ. श्रीवास्तव डी.एन. एण्ड, डॉ. वर्मा प्रीति मनोविज्ञान, शिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
6. पानेरी, माला : कम्प्यूटर सहायक अधिगम साधनों की प्रभावशीलता का अध्ययन, पीएच.डी., मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
7. श्रीमाली, ममता (2012–2013), राजस्थान माध्यमिक शिक्षाबोर्ड और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्ध माध्यमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा की वर्तमान स्थिति इस समस्याएँ', एम.एड, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
8. अग्निहोत्री प्रशान्त गुप्ता, दिव्या (2013) माध्यमिक विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली कम्प्यूटर शिक्षा का विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव'', प्रौण शिक्षा फरवरी मार्च।
9- Kumar, Sacher Tapan and Prathax Max, Shikha Rani (2014) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय पर शिक्षण की प्रक्रिया में आईसीटी का प्रयोग का अध्ययन,? Brics Journals of Educational Research, Vol. 4 June, 2014
10. उत्कर्ष से शैक्षिक उड़ान की तैयारी राजस्थान पत्रिका।
11- www.projectutkarsh.org
12- www.moinee.org.

*** Corresponding Author:**
डॉ. सुषमा तलेसरा, *प्रोफेसर एवं* **भावना गहलोत,** *शोधार्थी*
शिक्षा विभाग, शिक्षा विभाग विद्याभवन, जी.एस.शिक्षक महाविद्यालय (सीटीई)
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)